SYNOPSIS

कमलेश्वर के उपन्यासों में सामाजिक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Analytical Study of Social Values Depicted in the Novels of Kamaleshwar

Submitted by

Geethu Das
(22PHHIF001)

Supervisor

Dr. G. Shanthi
Professor, Department of Hindi

Submitted to

Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women
Coimbatore — 641 043

January 2025

कमलेश्वर के उपन्यासों में सामाजिक मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

मूल्य, मार्गदर्शक सिद्धांत हैं जो हमारे जीवन को आकार देते हैं और हमारे चरित्र को परिभाषित करते हैं । वे नींव हैं जिस पर हम अपने रिश्ते बनाते हैं, निर्णय लेते हैं और उद्देश्य की भावना पैदा करते हैं । आज की तेज़-रफ़्तार दुनिया में, जहाँ परिवर्तन निरंतर होता है और अनिश्चितता बड़ी होती है, मूल्य एक कम्पास के रूप में काम करते हैं, जो हमें उस ओर निर्देशित करते हैं जो वास्तव में महत्वपूर्ण है । मूल्य में ईमानदारी और निष्ठा से लेकर करुणा और सहानुभूति तक के कई सिद्धांत शामिल हैं जो व्यक्तिगत विकास, सामाजिक सद्भाव और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देते हैं । इन मूल्यों को अपनाकर, हम अपने और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर दुनिया बना सकते हैं।

कमलेश्वर एक प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार, उपन्यासकार और पत्रकार थे, जो अपनी अंतर्दृष्टिपूर्ण और विचारोत्तेजक रचनाओं के लिए जाने जाते थे । उनके लेखन में अक्सर मानवीय स्थिति का पता लगाया जाता था, जिसमें प्रेम, रिश्ते, सामाजिक मुद्दे और अर्थ की खोज जैसे विषय है । उनके उपन्यासों के माध्यम से मूल्य के महत्व को जाँचना मेरा लक्ष्य रहा कि मूल्य हमारे अनुभवों, रिश्तों और समाज में योगदान को कैसे आकार देते हैं और मूल्यों का पालन करने के महत्व पर गहराई से विचार करेंगे कि कैसे वे खुद में और हमारे आस-पास के लोगों में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं जो अधिक सार्थक भविष्य को आकार देने की शक्ति रखती है ।

शोध के उद्देश्य

- मानव जीवन में मूल्यों के महत्व को उजागर करना ।
- सामाज में प्रदिपादित सामाजिक मूल्यों पर प्रकाश डालना।
- कमलेश्वर के उपन्यासों में प्रदिपादित सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण करना ।
- मूल्य विघटन के परिणाम को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करना ।

साहित्य समीक्षा

- ललिता शर्मा, कमलेश्वर के कथा साहित्य में युग चेतना, हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी, हिमाचल 1990
- जानकी पडालिया, कमलेश्वर के कथा साहित्य में संघर्ष के विविध आयाम, यूनिवर्सिटी ऑफ़ मुंबई, मुंबई, 1993

- शैलजा पाटिल, कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्र सामाजिक जीवन का अनुशीलन, शिवाजी यूनिवर्सिटी, कोल्हापुर, 1997
- के राजेश पवार, कमलेश्वर के कथा साहित्य में नारी समस्या, वीर नरमद साउथ गुजरात यूनिवर्सिटी, गुजरात, 2002
- सूर्यनारायण वर्मा, कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक जीवन, आंध्रा यूनिवर्सिटी, विशाखपटनम, 2011
- के आनंदी, कमलेश्वर के गद्य साहित्य में मानव मूल्य, मनोंमनियम सुन्दरनार यूनिवर्सिटी, तिरुनेलवेली, 2012
- वीणा त्रिवेदी, कमलेश्वर का रचना संसार, महाराजा कृष्ण कुमार सिंह जी यूनिवर्सिटी, गुजरात, 2016
- दयाशंकर त्रिपाठी, कमलेश्वर का कथा साहित्य एक अध्ययन, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, गुजरात, 2017
- राय दीपक कुमार, कमलेश्वर के उपन्यासों में सामाजिक यथार्थ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर यूनिवर्सिटी, उत्तर प्रदेश, (पोस्टेड ईयर) 2019
- अनीता प्रजापत, कमलेश्वर के उपन्यासों में यथार्थवाद, महाराजा गंगा सिंह यूनिवर्सिटी, राजस्थान, 2020
- शाहीन मोहम्मद, हिंदी कहानी आंदोलन के संदर्भ में कमलेश्वर की कहानियाँ, आलीग्रेह मुस्लिम यूनिवर्सिटी, उत्तर प्रदेश, 2022

जहाँ तक मैंने देखा है, कमलेश्वर पर हिन्दी साहित्य में अनेक शोध कार्य तो हुए है, लेकिन मेरे शोध कार्य में कमलेश्वर के उपन्यासों में मूल्यों को समाज के विभिन्न परिस्थितियों के यथार्थ को विशेष महत्व देकर हुआ है । समाज मनुष्य के जीवन की ऐसी स्रोत है जो मूल्य के निर्माण का कारण बना और यह मूल्य एक संस्कृत देश को जन्म दिया । समाज से जुडी मूल्य कैसे व्यक्ति के जीवन में प्रभाव डालता है, कैसे सामूहिक परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिगत मूल्य में भी परिवर्तन होता है आदि पर विशेष महत्व किया है । इस दृष्टिकोण को महत्त्व देकर अभी तक कोई शोध परक अध्ययन नहीं हुआ है । इसलिए जहाँ तक संभव है मैंने इस विषय पर शोध अध्ययन करने का प्रयास किया है ।

प्रेरणा एवं सामग्री स्त्रोत

प्रेरणा स्त्रोत - कमलेश्वर को हिन्दी साहित्य की नई कहानी आन्दोलन के प्रमुख प्रवर्तक के रूप में स्थान प्राप्त है । स्नातकोत्तर काल में मैंने कमलेश्वर के दो उपन्यास पढे, जो विभाजन की

समस्याओं पर आधारित था । नई कहानी एवं समान्तर कहानी आन्दोलन के अग्रदूत होने के कारण ही उनके विषय की गंभीरता ने मुझे उनके अन्य सभी उपन्यासों को पढ़ने की ओर प्रेरित किया । बदलते समाजिक परिस्थिति में हमारे मूल्यों का क्षीण हो रहा है । कमलेश्वर के उपन्यासों में सभी प्रकार के विषयों को केंद्र में रखकर उपन्यास की रचना की गई है । उनके उपन्यासों में प्रतिपादित मूल्य एवं मूल्य विघटन के कारणों पर शोध करने का मेरा मन में एक आकांक्षा हुई, उसका परिणाम ही है यह शोध कार्य ।

सामग्री स्त्रोत

- प्राथमिक स्त्रोत: कमलेश्वर के सम्पूर्ण उपन्यास, मूल्य संबंधी पुस्तकें, पत्रपत्रिकाएँ-, एवं निजी अनुभव ।
- सहायक स्त्रोत: अन्य शोध कार्य, पत्र-पत्रिकाएँ, सहायक ग्रन्थ एवं वेबसाइट।

मैंने अपने शोध कार्य को पाचँ अध्यायों में विभाजित किया है -

प्रथम अध्याय - मूल्य अवधारणा : विकास एवं महत्त्व

मानव को सही राह पर चलने के लिए दी गयी सकारात्मक शिक्षाओं को 'मूल्य' कहते है । इस अध्याय में मूल्य की अवधारणा, मूल्य का स्वरूप, मूल्य की परिभाषा, मूल्य की विशेषता, भारतीय दृष्टिकोण में मूल्य, मूल्यों के प्रकार, मानव जीवन में मूल्यों का महत्व तथा मानव मूल्य और साहित्य आदि विषयों पर भी प्रकाश डाला गया है । जब-जब समाज में बुराइयाँ पनपती है तो साहित्यकार अपना कलम द्वारा उनके खिलाफ आवाज़ उठाता है । साहित्य और मानव मूल्य का निकट संबंध को दर्शाना एवं जिस प्रकार साहित्य द्वारा समाज में मूल्य की प्रतिष्ठा किया जाता है आदि विषय पर इस अध्याय में विचार किया गया है ।

द्वितीय अध्याय - कमलेश्वर के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय

इस अध्याय में 'उपन्यास' विधा का विकास, कमलेश्वर का व्यक्तित्व एवं साहित्य सृजन के साथ हिन्दी साहित्य जगत में उनका योगदान का विशेष उल्लेख किया गया है । कमलेश्वर के उपन्यास साहित्य में सम्पूर्ण बारह उपन्यासों - एक सड़क सत्तावन गलियाँ, डाक बंगला, लौटे हुए मुसाफिर, तीसरा आदमी, समुद्र में खोया हुआ आदमी, काली आंधी, आगामी अतीत, वही बात, रेगिस्तान, पति, पत्नी और वह, कितने पाकिस्तान, सुबह, दोपहर, शाम का सारांश दिया गया है ।

तृतीय अध्याय - कमलेश्वर के उपन्यासों में पारिवारिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्य - एक विश्लेषण

इस अध्याय में पारिवारिक मूल्य (पारिवारिक अलगाव ,विवाहोत्तर नारी का अकेलापन, तीसरे आदमी के प्रभाव से टूटता परिवार, जीवन की विसंगति का चित्रण), धार्मिक मूल्य (धार्मिकता की आढ़ में जली आम जनता, कपटी धार्मिकता का चित्रण) और सांस्कृतिक मूल्य (भारत की सांस्कृतिक एकता, सांस्कृतिक रीति – रिवाज़ और अनुष्ठान) पर विश्लेषण किया गया और मूल्यों को बनाये रखने की आवश्यकताओं पर भी चर्चा की गई है ।

चतुर्थ अध्याय - कमलेश्वर के उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक मूल्य - एक विश्लेषण

इस अध्याय में, सामाजिक मूल्य के अंतर्गत वेश्यावृत्ति – विकल्प या मज़बूरी, भारत की अखण्डता एवं परिवेश – स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व एवं पश्चात, महत्वाकांक्षाओं का पतन, नारी की दोहरे रूप का चित्रण, मानसिक संघर्षों से पीड़ित पात्र, समाजवाद की स्थापना, राजनीतिक मूल्य के अंतर्गत धार्मिकता की आढ़ में राजनीति, सत्ता की भूख का एक निकृष्टतम परिणाम, विभाजन का घातक परिणाम, भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था के साथ – साथ आर्थिक मूल्य, आर्थिकता का अभाव में टूटते पारिवारिक रिश्ते और वित्तीय संकट और संघर्ष पर भी विश्लेषण किया गया है । मनुष्य की दरिद्रता, विवशता, पारिवारिक रिश्तों का शिथिलता और इसका परिणामस्वरूप व्यक्ति का सामुदायिक जुड़ाव नष्ट होने की संवेदनापूर्ण करुणा भरी यथार्थ आदि का भी इस अध्याय में विश्लेषण किया गया है ।

पंचम अध्याय - कमलेश्वर के उपन्यासों की भाषिक संरचना

इस अध्याय में कमलेश्वर की भाषायी विशेषता, उनके द्वारा प्रयुक्त विविध प्रकार के शब्द एवं उसके विविध प्रकार (जैसे – तत्भव शब्द, तत्सम शब्द, देशी शब्द, अंग्रेज़ी शब्द, अरबी, उर्दू एवं फ़ारसी शब्द), मुहावरें एवं लोकोक्तियाँ, उनकी शैली की विविधता - वर्णनात्मक शैली, प्रतीकात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, संवादात्मक शैली, काव्यात्मक शैली, चित्रात्मक शैली आदि उनकी भाषाई पक्ष और उपन्यासों की शीर्षक की सार्थकता पर भी प्रकाश डाला गया है ।

उपसंहार

मूल्यों का स्थायी आधार ही मानव जीवन की उन्नती है । मूल्यों का लक्ष्य ही मानव जीवन को उत्कृष्ट बनाना है । मूल्य शाश्वत है जो कालक्रमानुसार बदला जा सकता है तथा नष्ट

भी किया जा सकता है । भारतीय परंपरा ही मूल्य केंद्रित रहा है । जिन आदर्शों से मनुष्य, समाज और राष्ट्र यथार्थ की कठोर भूमि पर खड़े होते हुए निरंतर उत्थान की ओर प्रेरित एवं कार्यरत रहती है, उन आदर्शों को मानव मूल्य कहा जा सकता है ।

सामाजिक मूल्य उन सिद्धांतों और मानकों को संदर्भित करते हैं, जो किसी समाज में मानव व्यवहार और बातचीत का मार्गदर्शन करते हैं । वह हमारे रिश्तों को आकार देते हैं, हमारे निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करते हैं कि क्या स्वीकार्य है और क्या वांछनीय है । सामाजिक मूल्य कारकों के संयोजन के माध्यम से जीवन में अनेक स्तर पर प्रभाव पडता है जैसे -

- परिवार और पालन पोषण - हमारा परिवार और देखभाल से हमें छोटी उम्र में ही मूल्य की सीख मिलती हैं, जो हमारी मान्यताओं और व्यवहार को आकार देते हैं ।
- संस्कृति और समाज - जिस संस्कृति में हम बड़े होते हैं और जिस समाज में हम रहते हैं वह हमारे मूल्यों, मानदंडों और विश्वासों को प्रभावित करता है ।
- व्यक्तिगत अनुभव - हमारे दोनों सकारात्मक और नकारात्मक अनुभव हमारे मूल्यों और विश्वासों को आकार देते हैं ।
- व्यवहार करने वाले लोग - हमारे मित्र, सहकर्मी और सामाजिक नेटवर्क हमारे मूल्यों और व्यवहारों को एक हद तक प्रभावित करते हैं ।
- शिक्षा - औपचारिक शिक्षा हमारे मूल्यों, विश्वासों और विश्वदृष्टिकोण को आकार देने में सहायक होती है ।
- मीडिया और प्रौद्योगिकी - जिस मीडिया और प्रौद्योगिकी का हम उपयोग करते हैं, वे भी हमारे मूल्यों को प्रभावित करते हैं ।

यह सभी कारकों और मूल्यों एक – दूसरे के संबंध में रहते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं । व्यक्ति के उम्र बढ़ने के साथ–साथ उसका मूल्य विकसित होते हैं या कभी बदल भी सकते हैं क्योंकि व्यक्ति समय के अनुसार नए अनुभवों, लोगों और विचारों का निरंतर सामना करता रहता है ।

सामाजिक मूल्य मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में कार्य करते हैं जो हमारे कार्यों और निर्णयों को प्रभावित करते हैं । जिससे निर्णय लेते समय हम अपने सामाजिक मूल्यों पर विचार करते हैं और ऐसे विकल्प चुनते हैं, जो हमारे मूल्यों के अनुरूप रहता हो । मूल्यों के कारण व्यक्ति आत्म-पहचान और विभिन्न परिस्थितियों और व्यवहारों का पहचान कर पाता है । सामाजिक मूल्य हमारे आत्म नियमन का मार्गनिर्देशन करते हैं और हमें यह बताते है कि हम अपने

विचारों, भावनाओं और कार्यों को कैसे नियंत्रित कर सकते है । इससे मनुष्य को अपना लक्ष्य, प्राथमिकता और मानक निर्धारित करने में सहायता मिलती है ।

कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों का सूत्र आम आदमी के ज़िंदगी से जोड़े हैं तथा पाठकों द्वारा अनुमान लगाया जा सकता है कि कमलेश्वर सामाजिक यथार्थ को निरूपित करने वाले उपन्यासकार हैं । उनका उपन्यास सदा उच्च कोटि की मानी जाती है, जो मानव जीवन में मूल्यों को प्रतिष्ठित करने की लक्ष्य रखती है । साथ ही व्यक्ति के तनाव, संत्रास, कुण्ठा, नारी जीवन की समस्यायें, स्त्री-पुरुष का बदलते संबंधों, विभाजन की त्रासदी, संस्कृतिक प्रश्न, समसामयिक समस्याओं का द्वंद, सांप्रदायिकता, मोहभंग की अनुभूति, जीवन की जटिलताओं आदि से युक्त उनकी कथा भूमि मनुष्य के टूटने और बनने की प्रक्रिया की गाथा प्रस्तुत करती है ।

एक तरफ जब कमलेश्वर ने 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' की बिंसरी, 'आगामी अतीत' की चंदा एवं चांदनी, 'डाक बंगला' की इरा आदि के द्वारा नारी जीवन का कड़वा चित्र को प्रस्तुत किया है । नारी के प्रति भोगवादी दृष्टिकोण और सामाज के कडू सत्यों का पर्दाफाश किया है और समाज के क्रूर आक्रामक रवैया को स्पष्ट रूप से दिखाया गया है । तो दूसरी तरफ 'तीसरा आदमी' की चित्रा, 'वही बात' की समीरा, 'काली आंधी' की मालती, 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' की तारा, 'सुबह दोपहर शाम' की शांता आदि स्त्री पात्रों को साहसी तथा स्वतंत्र विचारों से युक्त नारी के रूप में चित्रण किया है, जो अपना निर्णय की ज़िंदगी जीने के काबिल है । कमलेश्वर के उपन्यासों का विश्लेषण करने के पश्चात यह निष्कर्ष पर पहुँचती हूँ कि -

- पति पत्नी और वह' में शारदा, जो अपनी पति की पथभ्रष्ट रिश्ता जानते हुए भी अपनी परिवार को टूटने से बचाए रखने के लिए उसे दूसरे मौके का अवसर देती है ।
- 'तीसरा आदमी' की चित्रा जो अपनी व्यक्तिगत सुख को त्याग कर एक माँ होने के नाते अपनी एकलौते पुत्र की भविष्य के खातिर निस्वार्थ भाव से अपना शेष जीवन अकेली जीने का निर्णय लेती है ।
- 'डाक बंगला' की इरा एक ऐसी पात्र है, जो अपने पति विमल द्वारा त्यागने के पश्चात कई समस्याओं का सामना करती है, जो एक स्त्री के लिए असहनीय है । फिर भी वर्षों बाद विमल की अस्वास्थ्य की खबर सुनकर अपने पति के प्रति सच्चा प्रेम होने के नाते अंतिम समय में उसकी सेवा करती है । वर्तमान समाज में प्रचलित लिविंग टुगेदर और पैड वाइफ जैसे पाश्चात्य सभ्यता की ओर भी यहाँ इशारा किया है, जो भारतीय संस्कृति को कतई शोभ प्रधान नहीं करती ।

- कितने पाकिस्तान' उपन्यास में उन्होंने 'पकिस्तान' को बटवारे का प्रतीक के रूप में माना है । जाति, वर्ग एवं धर्म के नाम पर हो रहे बंटवारा ने आम जनता के जीवन को दुरूह कर दिया है । केवल भारत और पाकिस्तान की नहीं बल्कि विश्व भर में एक से दूसरे राज्य बनने, बाहरी शक्तियों द्वारा लोगों में हुकूमत चलाने एवं युद्ध की ओर भी इशारा किया गया है, जिसे लेखक ने प्रतीकात्मक ढंग से चित्रण किया है ।
- पाश्चात्य सभ्यता एवं नगरीकरण के प्रभाव ने भारतीय जीवन मूल्यों में काफी बदलाव डाला है । गाँव के लोगों का महानगर के प्रति का आकर्षण को व्यर्थ साबित करने में वह सफल रहे और इन व्यर्थ आकर्षणों के परिणामस्वरूप परिवार टूटने की दुर्दशा का चित्रण भी बखूबी ढंग से प्रस्तुत किया गया है ।
- भारत की संस्कृति में कृषि महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । आज हरियाली की जगह बड़ी-बड़ी इमारतें बन गई है । खेतों की जगह औद्योगिक अपशिष्ट फैली हुई है । लोग बाहर नौकरी की तलाश में निकल पड़ता है एवं अपना गाँव, घर, परिवार छोड़कर अकेले व्यक्ति स्वार्थ में जीवन बिताने का निर्णय लेता है । आज के ज़माने में कृषि की प्रधानता कम होने की नतीजा पर भी 'सुबह दोपहर शाम' की अम्मा जी पात्र द्वारा प्रकाश डाला है ।
- वर्तमान समय में भी भारत में हिन्दू - मुसलमान के भीतर अनेक विषय जैसे बाबरी मस्जिद, राम जन्मभूमि, यहाँ तक की जम्मू - कश्मीर को लेकर भी वर्ग संघर्ष एवं आतंकवाद बढ़ती जा रही है । लौटे हुए मुसाफिर' में विभाजन के त्रासदी के बावजूद भी लेखक ने एकता का संदेश दिया है । भारत से गए हुए मुसाफिर वापस यहाँ नौकरी की तलाश में लौट आते हैं जिससे राष्ट्रों के बीच एकता स्थापित हो सकती है ।
- 'काली आंधी उपन्यास की मालती' नामक पात्र के द्वारा वर्तमान समाज की विसंगती का चित्रण करने के साथ-साथ यह भी दिखाया है कि कैसे उम्मीदवार एवं नेताएँ किसी भी हद तक चाल एवं षड्यंत्र कर चुनाव में जीत हासिल कर लेते हैं । आज की कुछ कामकाजी महिलायें ऐसी है जो जिस परिवार की देखभाल के लिए नौकरी जाती है, उसे भूलकर अपनी पगति पर बल देती है जिससे वह अपनी पारिवारिक सुख को खो बैठती है ।
- भूमंडलीकरण और वैश्वीकरण से समाज विकास की ओर बढ़ता जा रहा है, लेकिन इसका नतीजा यह रहा कि गरीब और गरीब बनते रह गए और अमीर ज्यादा अमीर बनते गए । आर्थिक समस्या ने भी भारतीय जनता के जीवन को दुरूह कर दिया है ।
- उनके उपन्यासों में यातना और संसद का तनाव है जो समकालीन मानव जीवन की विसंगति की भयावह याकुलता का प्रतिफल है । यथार्थ से सार ग्रहण कर, निरंतर बदलते परिवेशों

का वहन करते हुए लिखने का प्रयास उनकी रचना शक्ति की विशेषता है । समयबोध एवं आत्मबोध की पहचान उनकी रचनाधर्मिता का बखूबी विशेषता मानी जा सकती है ।

- शहरी, कस्बाई एवं महानगरीय जीवन बिताने वाले लोगों के जीवन में व्याप्त वर्ग-वैषम्य, शोषण, सामाजिक असमानता, मूल्यों का विघटन, परंपरागत मान्यताओं के प्रति विद्रोह, आधुनिक समाज की दिशाहीनता, अस्पष्टता एवं बिखरावर और जीवन संघर्ष का यथावत वर्णन उनके उपन्यासों में मिलता है ।
- आशावादी दृष्टिकोण – उनका हर उपन्यास का अंत ऐसा होता है कि उनका पात्र समस्या में घेरा हुआ नहीं रहता । हर समस्या से स्वयं आत्मनिर्भर होकर अपनी स्थिति से बाहर निकालने की क्षमता उनमें निश्चित रहती है । अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए संघर्ष करते, आर्थिक संघर्षों से टूटते, सामाजिक परिस्थितियों से हारते, दबावों के जंजीरों में फँसे एवं पारिवारिक असमर्थताओं में गिरे व्यक्तियों का प्रमाणिक दस्तावेज़ के रूप में उनके उपन्यासों को देखा जा सकता है । मूल्यों को पालन करने की ज़रूरतों एवं मूल्य विघटन के दुष्परिणामों को उनकी उपन्यासों के माध्यम से स्पष्ट रूप में देखा – परखा जा सकता है ।

कमलेश्वर ने अपने उपन्यास साहित्य में पात्रों के माध्यम से सामाजिक मूल्यों की स्थापना पर बल दिया है । बदलते हुए परिवेश एवं बदलते परिस्थितियों में इंसान का बदलाव एवं जो अवमूल्यन होने लगा उसका चित्र भी उनके उपन्यासों में साफ दिखाई गई है । आज का व्यक्ति अपना व्यक्तिगत सुख और लाभ के पीछे अपने परंपरा एवं परिवार को खो देता है । स्वार्थ, कपटता, द्वेष, अकेलापन, यौन भावना, आर्थिकता का महत्व, हीनताबोध, लालसा आदि ने इंसान के संस्कार एवं मूल्यों को नष्ट कर दिया है और ऐसे व्यक्तियों के भीतर कोई मूल्य शेष नहीं रहता । वर्तमान समय में कमलेश्वर के उपन्यासों को अधिक प्रासंगिक माना जा सकता है क्योंकि कमलेश्वर ने जिस प्रकार अपने उपन्यासों में के द्वारा जो पूर्ण दृष्टि दिखाई है, दर्शी है वह वर्तमान समय में भी अधिक प्रासंगिक है ।

सामाजिक मूल्यों को समझने के लिए मैंने कमलेश्वर के उपन्यासों का सहारा लिया है । कमलेश्वर के साहित्य के आधार पर भविष्य में निम्नप्रकार की शोधकार्य के संभावनाएँ हो सकती है –

- कमलेश्वर के कथा साहित्य को अन्य भारतीय भाषाओं के कथा साहित्य से तुलनात्मक अध्ययन ।
- कमलेश्वर के उपन्यासों में प्रतिपादित नारी विमर्श – विश्लेषणात्मक अध्ययन ।

- कमलेश्वर के कथा साहित्य में मूल्य विघटन ।
- कमलेश्वर के उपन्यासों में युगबोध और सामाजिक यथार्थ ।
- कमलेश्वर के उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन की विषमता – एक विशेष अध्ययन ।
- कमलेश्वर के कथा साहित्य में जनवादी चेतना ।

मैं आशा करती हूँ कि मेरा शोध एक द्वार के रूप में काम करेगा जो कई संभावित शोध अध्ययनों को उजागर करने में सहायता करें जो समकालीन दुनिया में ,मूल्य के महत्व समाज को समझाये और यह सीख दे कि कैसे मूल्य जीवन को गहराई से प्रभावित कर सकता है, जैसे इस शोध कार्य ने मेरे जीवन को प्रभावित किया है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- **आधार ग्रन्थ**

क्रम	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
1	कमलेश्वर	काली आंधी	राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली06-, 2022
2	कमलेश्वर	समग्र उपन्यास	राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली06-, 2020
3	कमलेश्वर	समुद्र में खोया हुआ आदमी	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2015
4	कमलेश्वर	कितने पाकिस्तान	राजपाल एण्ड सन्स, नयी दिल्ली, 2006
5	कमलेश्वर	पति, पत्नी और वह	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
6	कमलेश्वर	रेगिस्तान	राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1998
7	कमलेश्वर	आगामी अतीत	शब्दकार प्रकाशन, तुर्कमान गेट, दिल्ली—006, 1983
8	कमलेश्वर	लौटे हुए मुसाफिर	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1978
9	कमलेश्वर	तीसरा आदमी	राजपाल एण्ड सण्स – पृ-88, नई दिल्ली, 1976

- **सहायक ग्रन्थ**

क्रम	लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
1	डॉ मनोराम्मा सिंह .	हिंदी लेखिकाओं के कहानी साहित्य में जीवन मूल्य	इंक पब्लिकेशन2023 ,
2	सविता भारद्वाज	धर्म संस्कृति और मूल्य बोध ,	कोषाल पब्लिकेशन ,उत्तरप्रदेश , 2022
3	नाहीद आबीदी	वर्तमान सन्दर्भ में वैदिक मूल्य	नशेनेल ट्रस्ट 2022 ,इंडिया ,
4	डॉ. उज्जवल यल्मे	इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित मानवीय संवेदना	शुभम् पब्लिकेशन, कानपूर, 2021
5	जीबी के.बी	भीष्म साहनी की कहानियो में बदलते जीवन मूल्य	जेनेरिक पब्लिशर, दिल्ली 2021
6	डॉ. विजय महादेव गाड़े	बीसवी शती के हिन्दी उपन्यासों की प्रासंगिकता	रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर, 2021
7	डॉ. संगीता मनोज कुमार सिंह	समकालीन हिंदी साहित्य और नव विमर्श	विकास प्रकाशन, कानपूर, 2021
8	डॉ. बबन शंकर सातपुते	कमलेश्वर के लघु उपन्यासों का शिल्प विधान	विनय प्रकाशन, कानपूर, 2021
9	डॉ. त्रिभुवन राय	आधुनिक साहित्य बोध	साहित्य रत्नाकरकानपूर ,, 2021
10	डॉ. विजय महादेव गाड़े	बीसवीं शती के हिंदी उपनासों की प्रासंगिकता	रोली बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स , 021 - कानपूर, 2021
11	डॉ. नगेन्द्र, डॉ. हरदयाल	हिन्दी साहित्य का इतिहास	मयूर पब्लिकेशन – दिल्ली , 2020 ,52
12	कमलेश्वर	नयी कहानी की भूमिका	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली , 2020
13	डॉ. एन पापा राव	मूल्य शिक्षण	सुदिव्या प्रकाशन ,रायपुर , 2020
14	आयुष्मान गोस्वामी	भारतीय मूल्य दृष्टि	साहित्यगर2020 ,जयपुर ,
15	डॉ. अलोक कुमार पाण्डेय	समकालीन साहित्य और मूल्य विमर्श	अनन्या प्रकाशन ,नई दिल्ली , 2020
16	डॉ. बसंतीबहन सी. मकवाना	मूल्य शिक्षण	परादैस पुब्लिशेर्स ,नई दिल्ली , 2020

17	सं.संजय कुमार	भक्तिकालीन साहित्य में जीवन मूल्य	शुभम पब्लिकेशन, कानपूर, 2019
18	धर्मवीर भारती	मानव मूल्य और साहित्य	वाणी प्रकाशन ,02 - दिल्ली , 2019
19	डॉ .डॉ ,दयानंद गौतम . इंद्र सिंह ठाकुर	मानव मूल्य और सामाजिक सरोकार	सानिया पब्लिकेशन- दिल्ली , 2018 ,94
20	डॉप्रीति चौहान .	मूल्य शिक्षण	एजुक्रिएशन पब्लिशिंग ,नई दिल्ली2018 ,
21	एतिवारी .एन .	नैतिक और मानवीय जीवन मूल्य	प्रतिश्रुति पब्लिकेशन , 2017 ,कोलकत्ता
22	डॉपशुपतिनाथ . उपाध्याय	साहित्य और संस्कृति	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2017
23	डॉपंडित बन्ने .	संत साहित्य में मानव मूल्य	शुभम पब्लिकेशन, कानपूर , 2016
24	छबिल कुमार मेहेर	मुक्तिबोध और मोल्यांकन	अनन्या प्रकाशन ,नई दिल्ली , 2016
25	डॉ. रमेश देशमुख	आठवे दशक की कहानी में जीवन मूल्य	विद्या प्रकाशन2016 ,कानपुर ,
26	डॉ. कुंवर भानु प्रताप सिंह	भारतीय राजनितिक विचारक	माउंट हिल पब्लिकेशन कम्पनी, दिल्ली090-, 2016
27	ममता जैन	मूल्य शिक्षण और उसका शिक्षण	राखी पब्लिकेशन ,उत्तर प्रदेश , 2016
28	राजेगोरे राम विश्वंभर	कमलेश्वर कृत कितने पाकिस्तान एक अध्ययन	एपब्लिकेशन.एस.बी., वारणसी, 2015
29	गुलाब कोतरी	मानस आध्यात्म और जीवन मूल्य	पत्रिका पब्लिकेशन ,जयपुर , 2015
30	प्रो. अशोक तायडे	आँचलिक उपन्यासों में मूल्य विघटन,	रोला प्रकाशन, कानपूर, 2015
31	राजेश जोशी	समकालीनता और साहित्य	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली , 2015
32	प्रकाशनारायण नाटाणी	भारतीय संस्कृति के विविध आयाम	अवतार पब्लिकेशन, जयपुर - 2, 2015
33	डॉ. भारती शेळके	महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य	विद्या प्रकाशन, कानपूर, 2014
34	रवीन्द्रनाथ टगोर	त्याग का मूल्य	अनन्या प्रकाशन ,नई दिल्ली , 2014

35	डॉ. स्वप्ना एम	मूल्य विघटन के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक युद्ध काव्यों का अध्ययन	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2013
36	डॉ. सुधरानी सिंह	कमलेश्वर जीवन यथार्थ के शिल्पी	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
37	डॉ. सविता चोखोबा किर्ते	हिन्दी उपन्यासों का मूल्यपरक विवेचन	विनय प्रकाशन, कानपूर, 2013
38	प्रतापसिंह राजपूत	कितने पाकिस्तानसाम्प्रदायिक : विमर्श	विनय प्रकाशन, कानपूर, 2013
39	डॉ. प्रमोद पाटिल	निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में जीवन मूल्य	विद्या प्रकाशन, कानपूर, 2012
40	अर्जुन चव्हाण	समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष	वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2012
41	डॉ. नंदिकिशोर आचार्य	परंपरा और परिवर्तन	कविता प्रकाशन, बीकानेर-05, 2012
42	डॉ. यादराम मीणा	भवभूति और जीवनमूल्य-	सिद्धार्थ इंटरप्राइजेज, जोधपुर, 2012
43	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	हिन्दी साहित्य का इतिहास	प्रकाशन संस्था, नई दिल्ली - 02, 2011
44	डॉ. रमा नवले	भाषा और साहित्य के विभिन्न आयाम	विकास प्रकाशन, कानपूर, 2011
45	डॉ. अशोक कुमार सिडाना, डॉ. बनवारी लाल जैन	मूल्यों की शिक्षा कैसे	शिव बुक डिपो, जयपुर -03, 2011
46	रघुवीर सिंह	बदलते मूल्य बोध और बौध धर्म	सूरज प्रकाशन, दिल्ली – 32, 2010
47	डॉ. अमरनाथ	हिन्दी भाषा का पारिभाषिक शब्दावली	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2009
48	डॉजलज भादुडी .	धर्म, दर्शन, संस्कृति और आदर्श जीवन	अर्पिता प्रकाशन, इलाहबाद, 2009
49	डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, डॉ.प्रमीला अवस्थी	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा	आशीष प्रकाशन, कानपुर, 2009
50	डॉ. रामविलास शर्मा	आस्था और सौंदर्य	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2009
51	तेजपाल चौधरी	भाषा और भाषा विज्ञान	विकास प्रकाशन, कानपूर, 2009
52	डॉ. प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	संस्कृति भाषा और साहित्य	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2009

53	डॉ. के.पी. जया	कथाकार कमलेश्वर	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2008
54	जयश्री	मूल्य शिक्षण	शिप्रा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008
55	डॉ. छायादेवी घोरपडे	सत्ठोतरी हिन्दी उपन्यासों में परिवर्तित नारी जीवन मूल्य	विद्या प्रकाशन, कानपूर, 2008
56	ए. अरविंदाक्षन	हिन्दी संस्कृति और भारतीयता	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2008
57	डॉरमेश कुंतल मेघ .	सौन्दर्य मूल्य और मूल्यांकन	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ,2008
58	डॉलौली ट्रीसा .	मूल्य परिकल्पना ओर आधुनिक हिन्दी नाटक	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2008
59	डॉशेषराव लिम्बाजी . राठोड	हिंदी उपन्यास शीर्षक तत्व एक विवेचन	चंद्रलोक प्रकाशन – कानपुर , 2008 ,021
60	प्रो. दिलीप सिंह	भाषा साहित्य और संस्कृतिक शिक्षण	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-002, 2007
61	लक्ष्मी सक्सेना	आधुनिक भारत के युग प्रवर्तक संत	लोकायत प्रकाशन, जयपुर, 2007
62	डॉ. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'	शैली और शैली विश्लेषण	वाणी प्रकाशन, दिल्ली-002, 2007
63	राजेन्द्र यादव	उपन्यास स्वरूप और संवेदना	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-002, 2007
64	डॉमाधव सोनटक्के .	हिन्दी साहित्य का इतिहास	विकास प्रकाशन, कानपुर, 2006
65	डॉ जोंर्ज माम्मान .	स्वातंत्र्योतर हिंदी उपन्यास और आधिनिकता बोध	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2006
66	डॉ टेस्सी जॉर्ज	स्वातंत्र्योतर हिंदी उपन्यासों में मूल्य परिवर्तन	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2006
67	डॉ. लाल साहब सिंह	स्वतान्त्रोत्त्र हिन्दी उपन्यासों में युगबोध-	अभय प्रकाशन, कानपूर, 2005
68	श्यामाचरण दुबे	समय और संस्कृति	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली – 002, 2005
69	डॉ. सौ शकुंतला पांचाल	हिंदी अनुवाद एवं भाषिक संरचना	अभय प्रकाशन, कानपूर, 2005

70	निर्मला जैन	आधुनिक साहित्य मूल्य और मूल्यांकन	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2004
71	डॉ. एम. के अजितकुमारी	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में सामाजिक चेतना	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2003
72	डॉ. शशिभूषण सिंहल	उपन्यास का स्वरुप	आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली, 2003
73	मधुकर सिंह	कमलेश्वर	शब्दाकर, दिल्ली- 06, 2003
74	सुरेश चन्द्र	समकालीन मूल्यबोध और संशय की एक रात	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 2002
75	पी.सी जैन	हिन्दी प्रयोग एक शैक्षिक व्याकरण	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली – 002, 2002

- **पत्र – पत्रिकाएँ**

क्रम	लेखक	लेख का शीर्षक	पत्रिका	ISSN	वर्ष
1	डॉ .इदुशेखर तत्पुरुष	भारतीय जीवन मूल्य और साहित्य	मधुमति पत्रिका	2321-5569	अप्रिल 2007
2	विश्वनाथ सचदेव	दुष्यंत कुमार की संस्करण से	धर्मयुग	0417-3937	अगस्त 2003

- **लिंक एवं वेबसाइट**

S.NO	WEBSITE
1.	https://www.bbc.com/hindi/entertainment/2009/06/090628_kamleshwardeath va tc2
2.	https://leverageedu.com/blog/hi/kamaleshvar-ka-jeevan-parichay/
3.	https://hindi.webdunia.com/current-affairs/kamleshwar-116012700071_1.html
4.	https://www.bhaskarhindi.com/state/news/indira-gandhi-banned-this-film-based-on-the-novel-kali-aandhi-316123
5.	https://www.aajtak.in/literature/profile/story/know-about-hindi-writer-kamleshwar-on-his-death-anniversary-639629-2019-01-27
6.	https://www.hindustantimes.com/india/kamleshwar-to-receive-shikhar-sahitya-samman/story-yCohivgRikQ5Q8c7dSL0jM.html
7.	https://www.jagran.com/sahitya/discussion-2958.html
8.	https://sahityanama.com/Classic-litterateur-Kamleshwar
9.	https://www.chaltapurza.com/kamleshwars-career-started-with-the-editing-of-vihaan-magazine/